नव वर्ष का संकल्प

दत्तोपंत ठेंगडी

॥ श्रीः ॥

दि.११.४.९४ - नागपुर -वर्ष प्रतिपदा उत्सव

मा.श्री. दत्तोपंत ठेंगडी का भाषण

डॉक्टरजी के जन्मदिन के नाते नहीं, क्यों कि संघ में व्यक्ति पूजा नहीं है, उनके जीवन कार्य का स्मरण करने और आद्यसरसंघचालक जी को प्रणाम करने इस उत्सव को मनाया जाता है। इस अवसर पर अपनी विकल अवस्था में भी श्री बाळासाहब उपस्थित हैं यह हमारा सौभाग्य है। श्री गुरुजीने श्री बाळासाहब का 'डॉक्टरजी की छोटी प्रतिकृति ' ऐसा स्वयंसेवकों को परिचय कर दिया था इसका मुझे स्मरण होता है।

डॉक्टरजी जन्मजात देशभक्त थे। बचपन से ही समकालीन सामाजिक, धार्मिक राजनैतिक और क्रान्तिकारी आदि सभी कार्यों में सहभागी होकर उन्होंने प्रत्यक्ष अनुभव प्राप्त किया था। कार्य करते समय उनका गहन चिन्तन भी चल रहा था। अनुशीलन समिती के एक नेता त्रैलोक्यनाथ चक्रवर्ती ने कहा था कि यद्यपि 'राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ' का जन्म १९२५ में हुआ, श्री केशवरावजी के मन में इस प्रकार का कार्य आवश्यक है, यह विचार १९१६ में जब वे क्रान्ति कार्य के लिए बंगाल में थे, तभी मुझसे कहा था। वे कहते थे, राष्ट्रीय स्वाभिमान के कारण स्वराज्य प्राप्ति के लिये ये प्रयत्न उचित ही है, परंतु स्वराज मिलने पर सब कुछ ठीक होकर हमारे प्रगति का मार्ग प्रशस्त होगा इस विचार से मैं सहमत नहीं हूँ। मुझे

लगता है कि जबतक इस देश के सामान्य नागरिक की राष्ट्रीय चेतना का स्तर उंचा होकर उनका संगठन नहीं होता, तब तक देश के भविष्य के विषय में आशा करना व्यर्थ है। अतः संघ स्थापना के पीछे डॉक्टरजी का कई वर्ष तक किया गया गहन चिंतन है।

१९२५ में संघ आरंभ करते समय, चिंतन पूर्ण हो जाने के कारण डॉक्टरजी के मन में कार्य की पूरी योजना थी, परंतु वे उस समय अधिक बोले नहीं। कहा कि दक्ष आरम करो। अच्छी शाखा चलाओ। वे उस समय पूरी संकल्पना कहते तो किसी को समझना भी कठिन था। जैसी जैसी संघ की शक्ति बढती गई, एक एक कदम समाज परिवर्तन की दिशा में संघ आगे बढाता गया। आज जो संघ सृष्टी का विस्तार हम देख रहे हैं, कोई अकल्पित नहीं है। १९२५ में डॉक्टरजी के मन में जो vision थी उसकी यह क्रमशः अभिव्यक्ति (progressive Unfoldment) हो रही है, और आगे भी होती रहेगी। आज हो रहा यह आविष्कार या प्रकटीकरण उन्होंने पहले से ही सोचा हुआ था। जैसे हमारी समझदारी का स्तर बढता जा रहा है, आविष्करण का एक एक नया पहलू हमें दिखाई दे रहा है।

संघ प्रारंभ करते समय हमें डॉक्टरजी से साध्य साधन विवेक प्राप्त हुआ। स्वराज्य यह तात्कालिक लक्ष है। यह " याचि देही याचि डोळा " पूर्ण होना चाहिये। परंतु अंतिम लक्ष्य है " परम् वैभवम् नेतु मे तत् स्व राष्ट्रम् "। इस लक्ष्य प्राप्ति के लिये " विधायास्य धर्मस्य संरक्षणम्" यह साधन है और "विजेत्री चनः संहता कार्य शक्ति' उस का आधार है। हिंदु संगठन, जो सबसे कठिन है, अपना आधारभूत कार्य है। हिंदु संगठन का कार्य संघ

करेगा। संपर्क, संस्कार और संस्कारित हिंदुओंका यानी स्वयंसेवकों का अनुशासन बध्द संगठन का निर्माण कार्य संघ करेगा। और इस संगठन कार्य की सीमाएं और हिंदुस्थान की सीमाएं एक रूप हो जाने तक कार्य वृध्दि करना। अर्थात पूर्ण हिंदु समाज व्यापी संघ हो इस हद तक काम को बढाना। मनोविज्ञान की दृष्टि से संघ संपूर्ण हिंदु समाज के साथ एकात्म है, यह अनुभूति होने तक कार्य वृध्दि हमें अपेक्षित है।

संघ इसी संगठन कार्य पर अपना ध्यान केंद्रित करेगा। और संघ से प्रेरणा और संस्कार प्राप्त स्वयंसेवक राष्ट्र जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में प्रवेश कर राष्ट्र पुनर्निर्माण कार्य में उपयुक्त अनेक विध कामों की रचना,तथा उस क्षेत्र में वैचारिक विकास करेंगे। संघ के व्दारा स्वयंसेवकों का निर्माण,और स्वयंसेवकों के व्दारा अन्यान्य क्षेत्र में कार्य का एवम् वैचारिक विकास, इस तरह का श्रम विभाजन डॉक्टरजी के व्दारा पहले से ही सोचा गया था। आज जो विभिन्न प्रकल्प दिखाई दे रहे हैं, वे उनकी संकल्पना का क्रमशः विकसन प्रकटन (progressive Unfoldment) मात्र हैं।

संघ कार्य प्ररंभ करने के पश्चात् डॉक्टरजीने स्वयं अपने स्वभाव में आश्चर्यकारक परिवर्तन किया। संघ स्थापना के पूर्व उनके भाषण शोले जैसे जोशीले औरआवेश पूर्ण होते थे। संघ का निर्माण होने के उपरान्त हिंदुत्व ही राष्ट्रीयत्व है, भगवा ध्वज राष्ट्रध्वज है, इस प्रकार ' दूध भात भिंडी की सब्जी' जैसे सौम्य, शब्दोंका प्रयोग वे अपने भाषण में करने लगे। किन्तु हम जानते हैं कि उनके सामने एक vision थी और उसे साकार करने का प्रयत्न, डॉक्टरजी का ऋषिऋण चुकाने में हम सब का कर्तव्य है।

उनकी vision का स्वरूप स्पष्ट करनेवाली संघ स्थापना के पूर्व की एक घटना का मुझे स्मरण होता है। १९२० में इंडियन नॅशनल काँग्रेस का नागपुर में अधिवेशन था। डॉक्टरजी उसकी स्वागत समिति के सक्रिय सदस्य थे। डॉक्टरजी के आग्रह के कारण काँग्रेस अधिवेशन की विषय नियामक समिति के पास एक प्रस्ताव भेज कर उसे अधिवेशन में पारित किया जाना चाहिये ऐसा कहा गया था। प्रस्ताव में कहा गया था कि काँग्रेस ने निःसंदिग्ध शब्दों में अपना ध्येय घोषित करना चाहिये। यह ध्येय द्विविध हो। भारत को पूर्ण रूपसे स्वतंत्र कर उसमें गणराज्य की (Republic state) स्थापना, और विश्व के सभी देशों को पूंजीवाद के चंगुल से मुक्त करना। ऐसी स्पष्ट घोषणा नागपुर के अधिवेशन में करनी चाहिये। राष्ट्रीय और आंतर्राष्ट्रीय स्तरपर एक द्रष्टा के नाते डॉक्टरजी के क्या विचार थे, इसका बोध इस घटना से होता है।

आज खंडित भारत में क्यों न हो हम गणराज्य चला रहे हैं। डॉक्टरजी का स्वप्न अभी अधूरा है। विभाजित भारत पुनः संलग्न होकर जब गणराज्य की स्थापना होगी तब उनके स्वप्न की पूर्ति हुई है, ऐसा कहा जायेगा। एक स्वयंसेवक के नाते हमेशा हमारे सामने 'अखंड भारत ' रहे। मन में नित्य जागृत रखने की यह बात है। दुनिया के इतिहास में इस प्रकार का सबसे अच्छा उदाहरण इस्रायल का है। अपनी मातृभूमि में अपने राज्य और राष्ट्र की स्थापना करेंगे ऐसा उनका निश्चय था। हर साल एक दूसरे से मिलते समय " अगले वर्ष जेरूसलम में " (Next year in Jerusalem) कह कर वे आपस में अभिवादन करते थे। यह क्रम १८०० वर्षतक चलता रहा। उन्होंने अपना लक्ष्य छोडा नहीं, और

इसी कारण इस्रायल की स्थापना हो सकी। भारत की तुलना में आयर्लंड का मामला पुराना है। अपना लक्ष्य हृदय में दृढता से धारण कर उनका काम चल रहा है। रोहिडेश्वर के शिवमंदिर में शिवाजी ने हिंदवी स्वराज्य स्थापना की प्रतिज्ञा ग्रहण करने के ११४ वर्ष के पश्चात् अटक पर भगवा ध्वज लहराया गया था। श्री गुरू गोविंदसिंहजी के व्दारा शस्त्र धारण कर प्रतिकार और पंचप्यारों की घटना हमें याद है। उस समय कार्य प्रारंभ करने के १४० वर्षों के बाद अफगानिस्तान पर काबू करना सिखोंको संभव हो सका था। एक ध्येय को दृढता से मनमें रखकर प्रयास करने पर लक्ष्य प्राप्ति होती है। हम एक दिन अखंड भारत का स्वप्न साकार करके ही रहेंगे, ऐसा हमें विश्वास है।

आज की स्थिति में प्रासंगिक और तात्कालिक अधिक महत्व रखने वाली एक और बात है। डॉक्टरजीने १९२० में कहा था कि विश्व के सभी देशों को पूंजीवाद के चंगुल से मुक्त कराना चाहिये। यह आश्चर्य जनक इसलिये है क्यों कि अभी अभी तक दुनिया के सब देश पूंजीवाद से प्रभावित होंगे ऐसी स्थिति नहीं थी। अभीतक समाजवाद, साम्यवाद आदि भिन्न भिन्न विचार प्रणालियाँ लोग अपना रहे थे। किन्तु आगे चलकर संपूर्ण विश्वपर पूंजीवाद छा जायेगा इतना दूर का विचार एक द्रष्टा के नाते डॉक्टरजीने उस समय किया था, जो इसी महिने में साकार होनेवाला है। पूंजीवाद दुनिया पर छा रहा है।

डंकेल के बारे में बहुत चर्चा हुई है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की अखिल भारतीय प्रतिनिधी सभा ने इस विषय पर प्रस्ताव पारित कर जनता का मार्गदर्शन किया है। संघर्ष का स्वरूप क्या

है, हम समझें। यह नया संघर्ष है। १५ अगस्त १९४७ को प्रथम स्वातंत्र्य संग्राम समाप्त हुआ, जो राजनैतिक स्वातंत्र्य के लिये था। अब दूसरा स्वातंत्र्य संघर्ष शुरू हो रहा है, जो आर्थिक स्वातंत्र्य के लिये है। १९४७ तक जो संग्राम था वह राष्ट्रीय स्तर का, हम और साम्राज्यवादी ब्रिटिश सरकार के बीच था। आज का संघर्ष राष्ट्रीय स्तर का नहीं है। अब तो दुनिया में तीसरा जागतिक युध्द छिड गया है। १९१४ का पहला और १९३९ का दूसरा, ये दो विश्व युध्द सैनिक शस्त्रों से लड़े गये थे। यह तीसरा विश्व युध्द आर्थिक शस्त्रों से लडा जा रहा है। संयोग की बात है कि सब विकसित गोरे देश उत्तर में स्थित हैं और गैर गोरे विकसनशील सब देश दक्षिण दिशा में है। इसी लिये उत्तरी देश और दक्षिणी देश यह नया शब्द प्रयोग प्रचलित हो गया हैं। यह आंतर्राष्ट्रीय, जागतिक विश्व युध्द है। इस विश्व युध्द का एक हिस्सा यानी हमारा व्दितीय स्वातंत्र्य संग्राम है, यह हम ध्यान में रखें।

इस व्दितीय स्वातंत्र्य संग्राम का स्वरूप हमें समझ लेना चाहिये। इसके पक्ष में सरकारी दल, मास मीडिया, टी.व्ही, सहित सबका उपयोग हो रहा है। विरोधी लोग भी जागृत हो गये हैं। उनके व्दारा मजदूर, किसान, विद्यार्थी, लघु उद्योजक, बुध्दिजीवी (Intellectuals) आदि सभी ने प्रदर्शन करते हुए अपना निषेध प्रकट किया है। वामपंथीयोंका ५ अप्रैल को और भाजपा के व्दारा ६ अप्रैल को किया गया प्रदर्शन प्रभावशाली रहा है। राजनीति निरपेक्ष और अन्य राजनीतिक दल, सभीने इसका विरोध प्रकट किया है। सभीने कहा है कि हमारे प्रधान मंत्रीने GATT समझौते पर हस्ताक्षर नहीं करना चाहिये। हम संघर्ष का स्वरूप समझ लें

और आनेवाली घटनाओं का स्वरूप ध्यान में रखें। प्रभावशाली प्रदर्शन करते हुए कहा गया कि हस्ताक्षर मत करो। सामूहिक मानसिकता में (Mass psychology) प्रभावित करनेवाले प्रदर्शन के उपरान्त भी हस्ताक्षर होजाने से, अब क्या हो सकता है ? अब तो यह (Fait accomply) पत्थर पर की लकीर है, इस प्रकार की निराशा और विफलता की भावना जन मानस में निर्माण होती है। इस विषय में हमें सावधान रहना चाहिये।

हम कहते हैं, और यही वस्तुस्थिति है कि नरसिंहरावजी ने एक बार तो क्या दस हजार बार हस्ताक्षर करने पर भी आनेवाली अच्छी या बुरी परिस्थिति में फरक पडने वाला नहीं है, क्योंकि उनके हस्ताक्षर जनता पर नैतिक दृष्टि से और संवैधानिक दृष्टि से बंधनकारक नहीं हैं। पिछले जिस चुनाव के कारण काँग्रेस सरकार सत्ताधिष्ठित हुई है, उसमें GATT जैसे समझोते के विषय में क्या करना चाहिये यह चुनाव का मुद्दा नहीं था। मतदाताओंने उन्हे स्वाक्षरी करने के लिये अधिकार या आदेश नहीं दिया है। प्रजातंत्र की चुनाव प्रक्रिया में जिस विषय का विचार नहीं हुआ है, और अगला चुनाव होने में देर होने पर, जनमत संग्रह (रेफरेन्डम्) लिया जाता है। युरोपीयन इकॉनॉमिक कम्युनिटी में सहयोग करना या नहीं करना, यह चुनाव का विषय इंग्लैंड में नहीं था। परंतु इसका निर्णय करने की आवश्यकता होने से और अगला चुनाव देर से होने वाला था इसलिये इंग्लैंड में जनमत संग्रह (रेफरेन्डम्)लेकर लोगों का आदेश प्राप्त किया गया। भारत में न ही रेफरेन्डम् लिया और न लोकसभा को विश्वास में लिया गया है। इसी कारण प्रधानमंत्रीको हस्ताक्षर करनेका नैतिक अधिकार नहीं है।

सरकार के पास सारी सत्ता केंद्रित है। अतः प्रधान मंत्री के हस्ताक्षर हम पर बंधन कारक नहीं है, ऐसा आप कैसे कह सकते हैं? इस प्रश्न के उत्तर में, वह बंधनकारी न होते हुए भी उसका परिणाम होगा। हस्ताक्षर करने से हमारी संप्रभुता समाप्त होती है। संवैधानिक सरकार के प्रतिनिधि के हस्ताक्षर हम पर बंधनकारक नहीं है ऐसा कहने मात्र से काम नहीं होगा। यदि जनजागरण हुआ होता तो यह प्रश्न ही नहीं पैदा होता। इस विषय में अमरीका का उदाहरण उद्बोधक है। दूसरे महायुध्द के पश्चात विजेता राष्ट्रों के प्रतिनिधी 'व्हर्साय' में एकत्र हुए थे। वहां नई दुनिया की रचना की गई और 'लीग ऑफ नेशन्स' की स्थापना हुई थी। सब कार्य अमरीका के प्रेसिडेंट विल्सन के नेतृत्व में किया गया। प्रेसिडेंट विल्सन की सज्जनता के कारण ब्रिटन के लॉईड़ जॉर्ज और फ्रान्स के क्लेमन्स ने चतुराईसे विल्सन की विश्व के त्राता इस नाते प्रशंसा करने पर अगुआपन लेकर लीग ऑफ नेशन्स की स्थापना और व्हर्साय का समझौता विल्सन व्दारा संपन्न किया गया। विश्व के त्राता इस नाते सब देशों की राजधानी में उनका स्वागत भी जोर शोर से हुआ। परंतु जयजयकार और सत्कार समारोह होते समय अमरीकी जनता का इस बारे में क्या विचार है इस बारे में सोचना विल्सन भूल गये। अमरीकीं जनता जागृत थी। योरोपीय देशों के अंतर्गत व्यवहार में अमरीकाने उलझना नहीं चाहिये, ऐसा वे सोचते थे। इस कारण विल्सन जब अमरीका लौटे तब उनका स्वागत नहीं हुआ। उनके व्दारा कहा गया विचार अस्वीकार किया गया और अमरिकन काँग्रेस(अमरिकन पार्लमेंट) ने प्रस्ताव पारित किया कि प्रेसिडेंट विल्सन ने जो लीग ऑफ नेशन्स की स्थापना की है उससे

हम सहयोग (associate)नहीं करेंगे। प्रेसिडेंट विल्सन ने जो व्हर्साय का समझौता किया है उसे हम स्वीकार नहीं करते। प्रेसिडेंट विल्सन यह आघात सह नहीं सके। अगले चुनाव में वे हार गये और पक्षाघात से उनकी मृत्यु हो गयी। जनता जागृत रहने से ' दुनिया के त्राता ' माने जाने वाले विल्सन को भी पक्षाघात होकर मृत्यु तक पहुंचना पडा था। विल्सन को संवैधानिक अधिकार तो था, परंतु नैतिक अधिकार नहीं था यह जागृत जनताने उन्हें दिखा दिया।

आज जो लडाई शुरू होगई है उसका स्वरूप हम समझ लें। तृतीय विश्वयुध्द का एक हिस्सा भारत में चल रहा है। कुछ योरोपीय देशों में भी यह संघर्ष चल रहा है। यह षड्यंत्र है। राज्यकर्ताओं से सांठ गांठ कर जनता को अंधेरे में रख कर समझौता हो रहा है। और जनता को उसका पता बाद में लगता है। दुनिया के इतिहास में पहली बार फ्रान्स और योरोपीय कम्युनिटीके १२ देशों के किसानोंने प्रदर्शन करते हुए अपने सरकारसे मांग की कि किसानों के बारे में किये गये समझौते पर आपके व्दारा किये गये हस्ताक्षर वापस लो (Withdraw)। कॅनेडा में NAFTA पर जिन्होंने हस्ताक्षर किये थे , वह राजकर्ता दल अगले चुनाव में हार गया। उस दल को केवल दो सीटें मिली। चुनाव में सफल सरकार दल के प्रधान मंत्री ने अमेरिका के क्लिंटन को लिखा कि सुसंस्कृत शासन से अपेक्षित सातत्य को (Civilised Govt. की Continuity) हम मानते है, किन्तु जिसपर हस्ताक्षर हुआ है वह समझौता हमारे लिये असुविधा जनक रहने से उसके बारे में नये सिरेसे विचार विमर्श हो। (We demand renegotiation on the agreement) यह घटना भी दुनिया के इतिहास में पहली

ही है। मेक्सिको में तो किसानों ने शस्त्र धारण कर विद्रोह किया, जिसको दबाया गया।

इसलिये एक बार हस्ताक्षर होजाने पर वह पत्थर की लकीर बन जाती है, ऐसा समझने का कारण नहीं है। यह लंबी लडाई है। लडाई अमेरिका से कहिये या पूंजीवाद से, परंतु संघर्ष लंबा है। शासकों के व्दारा भूमिका पहले से ही बांधी गई थी कि इसका कोई पर्याय नहीं है। १६ वर्ष पूर्व श्री. जे. डी. बिर्ला ने अपने लेख में कहा था कि For purpose of domestic market India is a world in itself भारत में Natural resources, talent, producers, consumers सब कुछ रहने के कारण यदि We are isolated from the rest of the world तो भी हम Manage कर सकेंगे।

जैसा अमेरिका का आक्रमण बढता गया वैसे तृतीय विश्व के देशों में लोकजागृति और सतर्क वृत्ति (Awareness and realisation) भी बढती गई। उसका प्रतिकार किये जाने का विचार भी आरंभ हो चुका है। मलेशिया के महातीर महंमद की प्रेरणा से जो South Commission स्थापन हुआ जिसके अध्यक्ष तांझानिया के श्री. न्येरेरे थे और सेक्रेटरी जनरल डॉ. मनमोहन सिंग थे। इन्होने आर्थिक परिस्थिति का अध्ययन कर CHAL-LENGE TO THE SOUTH नामक रिपोर्ट तैयार की जो अभी प्रकाशित हुई है। इस रिपोर्ट में स्पष्ट रूप से कहा गया है कि गोरे देश सब को हडपना चाहते हैं। इनको रोका नहीं गया तो हम बरबाद हो जायेंगे। इसलिये गैर गोरे तृतीय विश्व के देशोंने आपसमें सहयोग बढाना चाहिये। यह रिपोर्ट डॉ. मनमोहन सिंग

के मार्गदर्शन में तैयार हुई थी। आश्चर्य की बात यह है कि अर्थ मंत्री बनने के पश्चात् वे इस रिपोर्ट में जो कहा गया था, वह सब भूल गये South-South Cooperation! यह एक बडा शस्त्र हाथ में होते हुए भी केवल लाचारी के कारण वे अपनी रिपोर्ट की बातें भूल गये। केवल व्यक्तिगत या पारिवारीक लाचारी से यह गलत Agreement हो गया, इतना हम अवश्य कह सकते हैं।

प्रधान मंत्री को हस्ताक्षर करने का नैतिक अधिकार नहीं हैं। हस्ताक्षर करने पर भी वह जनता पर बंधनकारक नहीं हैं। यह सब होते हुए भी हस्ताक्षर हो जाने के पश्चात GATTसमझोते पर अमल शुरू होगा। भारत में विदेशी पूंजी और बहुराष्ट्रीय कंपनियोंका आना आरंभ होगा। सैनिक शस्त्रों की लडाई में अपने देश का कुछ हिस्सा हम खोते है । अब होने वाले आर्थिक संघर्ष में अपनी एक कंपनी, एक अर्थोत्पादन करने वाला उद्योग भी यदि हम खोते हैं तो हमें भारत की जमीन का एक टुकडा खोने जैसा ही दुःख होगा। इस आर्थिक संघर्ष में सैनिकी संघर्ष से स्वरूप भिन्न होकर भी, मनोवैज्ञानिक और राजनीति की दृष्टि से वे समान ही है।

व्दितीय महायुध्द के पूर्व जर्मनी लडाई की तैयारी कर रहा था। इंग्लैंड में चेंबरलेन प्रधान मंत्री थे। चर्चिल सचेत होने की बार बार सूचना देकर जनतासे कहते थे कि हमें लडाई की तैयारी करनी चाहिये। परंतु चर्चिल War Monger है, अकारण भडका रहे है, ऐसा कहते हुए चेंबरलेन कहते थे कि शांतता का समय है। इस विषय में एक श्रेष्ठ इतिहासकार ने लिखा हैं कि म्यूनिक समझोते पर हस्ताक्षर कर जब चेंबरलेन इंग्लैंड लौटे तो हजारों अंग्रेजोंने

उनका स्वागत किया। डाऊनिंग स्ट्रीट पर उनके मकान में आने पर भी उनका भव्य स्वागत हुआ। उस समय उन्होंने अपने भाषण में कहा कि अब शांतता होगी, आपको चिंता करने की आवश्यकता नहीं है। उनके व्दारा कहा गया और इतिहास में लिखा हुआ उनका वाक्य है, " Now I ask you to go home and have quiet sleep " लोग प्रसन्न होकर चेंबरलेन की जयजयकार करते हुए अपने घर लौटे।

किन्तु महायुध्द छिड गया। लोगों को पता चला कि सब Calculations गलत थे। war monger चर्चिल कहता था वही बात सही थी। पश्चात १९४० में House of commens में सरकारी नीति की आलोचना की गई। लॉइड जॉर्ज ने ८मई १९४० के अपने भाषण में कहा सरकारीनीति पूर्णतया गलत थी। अब प्रधान मंत्री अवाहन कर रहे हैं कि हमें राष्ट्र के लिये बडा त्याग करना चाहिये। सुयोग्य नेतृत्व आवाहन करे तो जनता त्याग के लिये तैयार हैं।यदि त्याग की ही आवश्यकता है तो प्रधान मंत्री जी ने अपने पद का त्याग करना यही आजकी परिस्थिति में देश के लिये उपयुक्त सिध्द होगा। इस पर प्रधान मंत्री ने त्याग पत्र दे दिया। आगे चलकर राष्ट्रीय सरकार की (National govt.) वहां स्थापना हो गयी थी। बाकी का इतिहास हम जानते हैं।

हिटलर की तैयारी थी। अंग्रेज तैयार नहीं थे। इस कारण reverses आये Set back मिलने लगे। इंग्लैंड सागरी सम्राट होते हुये भी डंकर्क में पराभूत हुआ। चर्चिल ने अपने भाषण में स्पष्ट कहा था कि युध्द लंबा है, अनेक वर्षतक लडना पडेगा। हमें खून, पसीना और आंसू ही बहाने पडेंगे (Blood, Sweat & Tears)।

लंबी देर तक त्याग करते रहने का आवाहन चर्चिल करते रहे। जहां लडाई में पीछे हटना पडता था तो उसे Operation Salvage या successful retreat कहते थे। डंकर्क से अधिक सैनिक और शस्त्रास्त्र कुशलता से इंग्लैंड लाने में सफल हुये इसलिये वहां के ॲडमिरलका सन्मान किया गया। पीछे हटते समय कमसे कम हानि हो यही स्पष्ट करने के लिये successful retreat शब्द प्रयोग प्रचालित किया गया।

इसी समय देश की मानसिकता युध्द के लिये तैयार करना और युध्द साहित्य निर्मिती करना इन दोनो मोर्चों पर चर्चिलकी प्रेरणा से इंग्लैंड का प्रयास चलता रहा। वे जनता से कहते थे कि हम लंबी देरतक लड़ते रहेंगे, प्रतिकार करतेही रहेंगे। उधर हिटलर का प्रचार था कि इंग्लैंड बनियों का देश है। (England is a Nation of Shopkeepers) ये अधिक देर तक लड़ नहीं सकेंगे। समय बीतता गया। इंग्लैंड का प्रतिकार, उनका साहस और morale बढता गया, अधिक प्रखर होता गया और जर्मन लोगों का धीरज कम होने लगा। चर्चिलने अंग्रेजी जनता से पहले से ही कहा था कि हम तैयारी करेंगे और आखरी जीत हमारी होगी। धीरे धीरे वे सफलता पूर्वक प्रतिकार करने की स्थिति में आगये। यह धीरज की, पेशन्स की लडाई थी। प्रारंभ में सिध्दता न रहते हुए भी अंतमें जीत अंग्रेजों की हुई। इस war of nerves में इंग्लैंड यशस्वी हुआ।

अमेरिका के व्दारा प्रारंभ की गई भारत की आर्थिक लडाई बहुत बडी है। अमेरिका की दादागिरी अधिक समय तक नहीं चल सकेगी। आज अमेरिका की ताकत बडी दीख रही है, परंतु वह कम

हो रही है। १९६०से उनकी अर्थव्यवस्था टूट रही है। For their own survival अपनी अर्थव्यवस्था टिकाकर रखने के लिये दुनिया के शोषण का वे विचार कर रहे हैं। हम विश्वास के साथ कहना चाहते हैं कि सन २०१० तक अमेरिका का आर्थिक क्षेत्र में आजका क्रमांक एक का स्थान भी टूट जायेगा। पूंजी वाद व्यवस्था भी नष्ट होगी। अमेरिका के चिंतक भी यही बात कहते हैं। भारत के लिये यह war of nerves है।

मलेशिया छोटासा देश है परंतु उसका प्रतिनिधि अमेरिका को " तुम्हारी यह bullying tactics " हम नहीं चलने देंगे " कहने का साहस कर सकता है। " छोटासा दक्षिण कोरिया अमेरिका से कहता है " हम जिस क्षेत्र में चाहते हैं उसी क्षेत्र में investment करो "। छोटासा उत्तर कोरिया प्रक्षेपणास्त्रों के विषय में अमरिकी दादागिरी मानने को तैयार नहीं है। किन्तु लडाई के लिये सिध्द है। छोटासा कोरिया अमरिकासे लडाई करने की बात हिंमत से करता है, यह हम सोच भी नहीं सकते। जपान कई साल तक अमेरिका के प्रभाव में रहा। वह आज अमरिका से As a matter of strategy सीधा कहता है कि समझौता आपकी नहीं, हमारी शर्तोंपर होगा। चीन GATTका सदस्य न होते हुये भी उसको most favoured Nation का दर्जा था। Human rights के बारे में अमेरिकाके कहने पर चीन ने कहा कि हमारे अंतर्गत मामले में आप हस्तक्षेप कर रहे है। हमारी स्वाधीनता पर यह आक्रमण है। अमेरिका के यह कहने पर कि यदि आप नहीं मानते तो आपका most favoured Nation का दर्जा समाप्त करेंगे, चीन ने कहा कि जरूर समाप्त कीजिये। American Market will be

closed to chinese goods ऐसा अमरिका के कहने पर चीन ने उत्तर दिया. " Chinese market will be closed for your American Goods." धीर धीरे अमेरिका के दादागिरी के विरोध में बोलने की हिम्मत करनेवालों की संख्या बढ रही है। South South Co-Operationकी संकल्पना में, बडा देश होने के नाते हिन्दुस्थान की ओर नेतृत्व के लिये बाकी विकसनशील देश देख रहे थे। एप्रिल १९८९ में भारत के प्रतिनिधी ने विकसनशील देशों का विश्वासघात करते हुए समर्पण कर दिया। परंतु आज भी तृतीय विश्व के देश हिन्दुस्थान की ओर आशा से देख रहे हैं।

आज धीरज और पेशन्स हमारे लिये महत्वका है। पेशन्स यह अमेरिका का यानि अमेरिका के राज्यकर्ता और वहां के Monopoly Capitalist लोगोंका weak point है। वहां के निग्रो, युरो अमेरिकन, मेक्सिकन्स्, रेड इंडियन्स्, और गरीब अँग्लो सॅक्सन का भी ये राज्यकर्ता शोषण कर रहे हैं। व्हिएतनाम जैसे छोटेसे नवस्वतंत्र देशों में अपना प्रभाव निर्माण करने हेतु अमेरिकाने शस्त्रास्त्र और बडी सेना भेजी थी। सेना को कहा गया था कि देश छोटासा है, अपना कार्य सफल कर दो साल में लौट आयेंगे। व्हिएतनाम ने प्रतिकार करने का सोचा और आठ वर्ष तक प्रतिकार चलता रहा। पेशन्स न रहने से अमरिका के लोगों ने, अपने बच्चों को व्हिएतनाम में क्यों मरवा रहे हो ऐसा पूछा। दसवें साल में विजय की आशा छोडकर शस्त्रास्त्र से सुसज्ज अमेरिकन सेना को वापस आना पडा।

हिन्दुस्थान के इतिहास में भी पेशन्स की लड़ाई का हमें अनुभव हैं। बडी सेना लेकर औरंगजेब महाराष्ट्र में आये थे। मराठों

की खस्ता हालत थी। सन १६७० से राजा भी नहीं था। राजाराम इधर उधर प्रवास करते रहे थे। राजा, सेना, सेनापति, और खजाना कुछ भी न होते हुए भी छापामार लड़ाई चल रही थी। औरंगजेब के पास सुसज्ज सेना, खजाना, साधन, संपन्नता सब कुछ रहते हुए भी १८ साल तक लड़ाई चलती रही। अंत में हिन्दवी स्वराज की कब्र रचने की प्रतिज्ञा से दख्खन में आये औरंगजेब की ही दख्खन में कब्र बनी। पेशन्स यह हिन्दुओंका Strongest Point है। War of nerves में किसका धीरज ज्यादा टिकता है, इसीका महत्व रहता है। पेशन्स में अमेरिका दुर्बल है और हिन्दुओं में अनेक दुर्गुण और दोष होकर भी दुनियाने यह मान लिया है कि Patience is the strongest point of HINDUS.

इस आर्थिक संघर्ष में रणनीति के विषयमें हम सोचेंगे परंतु इस संघर्ष में हम विजयी होंगे यह विश्वास आज के पर्व पर हम हृदय में धारण करें। लडाई लंबी रहने से त्याग की तैयारी करनी पड़ेगी। साधन संपन्न आसुरी शक्ति पर दैवी शक्तीने विजय प्राप्त की थी इस आकांक्षा को हृदय में जगानेवाले शालिवाहन के विजय पर्व को हम मना रहे हैं । डॉक्टरजीने हमारे हृदय में जगाया हुआ विजय का विश्वास, लडाई की लंबी अवधिऔर सफलता हेतु त्याग की तैयारी का दृढ निश्चय हम आज के सुअवसर पर करें।

* * * *

प्रकाशक

भारतीय विचार साधना, महाल, नागपुर

अक्षर रचना व मुद्रक

ओरायन सिस्टीमस्, तात्या टोपे नगर, नागपुर

सहयोग शुल्क

३ रुपये